





दृष्टांत एक ऐसी कहानी है जिसका उपयोग किसी नैतिक शिक्षा या पाठ को समझाने के लिए किया जाता है। यीशु अक्सर दृष्टांतों में बोलते थे, और कई बार हमें बताया जाता है कि लोगों को ये दृष्टांत समझ में नहीं आए।

यीशु ने दृष्टांत की शुरुआत यह कहकर की कि जो कोई भी दरवाजे से होकर गुजरे बिना भेड़शाला में घुसने की कोशिश करता है वह चोर या डाकू है; चरवाहे दरवाजे से ही अंदर आते हैं।

भेड़बाड़े को कभी-कभी "भेड़ का घर" भी कहा जाता था, और यह वह जगह होती थी जहाँ भेड़ें रात बिताने के लिए आती थीं।

यह आमतौर पर पत्थर की दीवारों वाला एक स्थायी ढांचा होता था, और घुसपैठियों को रोकने के लिए अक्सर इसकी छत पर टहनियाँ या कांटेदार झाड़ियाँ लगाई जाती थीं। भेड़ों के कई झुंड यहाँ रात बिताते थे, और एक द्वारपाल या चौकीदार दरवाजे की रखवाली करता था।

सुबह के समय, जब चरवाहे अपनी भेड़ों को लेने आते थे, तो द्वारपाल उनके लिए दरवाजा खोल देता था। भेड़ें अपने चरवाहे की आवाज पहचान लेती थीं और उसके पीछे-पीछे चल देती थीं।

अक्सर चरवाहे दिन के समय किसी खेत में इकट्ठा होते हैं और एक से अधिक भेड़ों के झुंड को एक साथ लाते हैं। भेड़ें अपने चरवाहे की आवाज पहचानती हैं और जब चरवाहा अपने झुंड को बाहर ले जाता है तो प्रत्येक भेड़ अपने-अपने चरवाहे के पीछे-पीछे चलती है।

भेड़ें किसी अजनबी का पीछा नहीं करेंगी, बल्कि भाग जाएंगी, क्योंकि वे अजनबियों की आवाज़ नहीं पहचानतीं।

यीशु फरीसियों को यह दृष्टांत सुना रहे थे, लेकिन वे समझ नहीं पाए। यीशु समझाने लगे।

वह उनसे कहता है कि वह भेड़ों का द्वार है।

उससे पहले जो भी व्यक्ति स्वयं को मसीहा होने का दावा करता था, या जो कोई भी ईश्वर तक पहुँचने का दूसरा मार्ग बताता था, वह चोर और डाकू था। जो भेड़ें थीं - विश्वासी - उन्होंने चोरों और डाकूओं का अनुसरण नहीं किया।

वह फिर कहता है कि वही द्वार है।

यदि तुम यीशु के माध्यम से प्रवेश करोगे, तो तुम्हारा उद्धार होगा, तुम आ-जा सकोगे और तुम्हें चारागाह मिलेगा।

यह रोचक है। इसे भजन संहिता 23 में हमारे चरवाहे द्वारा किए गए वादे से जोड़ा जा सकता है। क्योंकि हम यीशु के माध्यम से आए हैं, इसलिए हमें चारागाह मिलेगा - वह हमें जल के किनारे हरे-भरे चारागाहों में ले जाता है, वह हमें धार्मिकता के मार्ग पर ले जाता है, और जब हम खतरे से गुजरते हैं तो हमारी रक्षा करता है।

फिर वह चोर के बारे में बात करता है।

चोर कौन है? चोर शैतान है, शैतान चोरी करने, मारने और नष्ट करने आता है। यीशु हमें जीवन देने आया, और केवल जीवन ही नहीं, बल्कि एक परिपूर्ण और तृप्त जीवन देने आया।

यीशु समझाते हैं कि वे चरवाहे हैं, और यहाँ वे अपने कूस पर चढ़ने का जिक्र अप्रत्यक्ष रूप से करते हुए कहते हैं कि एक अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिए अपनी जान दे देता है। एक मज़दूर भेड़ों का मालिक नहीं होता। अगर वह किसी भेड़िये को आते हुए देखता है, तो वह भेड़ों को छोड़कर भाग जाएगा, और फिर भेड़िया भेड़ों पर हमला कर देगा। मज़दूर इसलिए भाग जाता है क्योंकि उसे काम पर रखा गया है, और उसे भेड़ों की कोई परवाह नहीं होती।

यीशु ही सच्चा चरवाहा है। वह अपनी भेड़ों को जानता है - वह आपको भी जानता है! और उसकी भेड़ें उसे जानती हैं।

यीशु हमें बताते हैं कि वह पिता को जानते हैं, और पिता उन्हें जानते हैं; और उन्होंने हमें बचाने के लिए अपना जीवन दे दिया।

उनके पास कुछ और भेड़ें भी हैं जो एक अलग झुंड में हैं; वे गैर-यहूदियों के बारे में बात कर रहे थे। इस समय तक, यीशु यहूदियों की सेवा कर रहे थे, लेकिन उनके पुनरुत्थान के बाद, सभी विश्वासी ईसाई होंगे, यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच कोई भेद नहीं होगा।

पिता यीशु से प्रेम करते हैं क्योंकि उन्होंने बलिदान के रूप में अपना जीवन दे दिया ताकि पिता उसे फिर से ले सकें। यीशु आगे कहते हैं कि किसी ने भी उन्हें यह बलिदान देने के लिए विवश नहीं किया।

उन्होंने अपना प्राण त्यागने का निर्णय लिया, और साथ ही उसे वापस पाने की शक्ति भी त्याग दी; यह यीशु का स्वैच्छिक निर्णय था।

कहानी में यीशु



इस दृष्टांत में बहुत सी सच्चाइयाँ निहित हैं।

यूहन्ना 10:2 में इसका यह अर्थ भी हो सकता है कि पादरी और नेता भी भेड़ों के चरवाहे हो सकते हैं। जो नेता यीशु के द्वारा प्रवेश करते हैं, वे भेड़ों के चरवाहे होते हैं। यदि कोई नेता आपको यीशु तक नहीं ले जाता, तो यीशु ने उन्हें चोर और डाकू कहा है, और वे सत्य की ओर नहीं ले जाते। हमें हर उस व्यक्ति की जाँच करनी चाहिए जो सिखाता है, और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे हमेशा यीशु की ओर ही ले जाएँ।

वही एकमात्र उपाय है।

यूहन्ना 10:3-4 कहता है कि वह अपनी भेड़ों को नाम से पुकारता है।

वह आपको व्यक्तिगत रूप से जानता है! वह आपका मार्गदर्शन करता है। वह आपके आगे चलता है, और आप उसका अनुसरण करते हैं क्योंकि आप उसकी वाणी को पहचानते हैं।

यीशु की भेड़ें उसकी आवाज़ सुनती हैं।

कभी-कभी लोगों को लगता ही नहीं कि वे यीशु की आवाज़ सुन रहे हैं। वह हमेशा हमसे बात करते हैं, लेकिन हमें शांत रहकर उनकी बात सुननी होगी। हमें अपना कान उनकी ओर करके उनकी बात ध्यान से सुननी होगी। कल्पना कीजिए कि आप किसी शोरगुल वाली जगह पर हैं और आपका दोस्त आपसे बात कर रहा है। आप उनकी ओर झुकते हैं, और उनकी बात ध्यान से सुनने की कोशिश करते हैं। हमें यीशु की आवाज़ भी इसी तरह सुननी चाहिए; उनकी आवाज़ ही सबसे महत्वपूर्ण है जिसे हम सुन सकते हैं।

यूहन्ना 10:10 कहता है हमें यह पता है कि चोर वह होता है जो चोरी करता है, हत्या करता है और विनाश करता है।

कभी-कभी लोग हमारे जीवन में बुराईयाँ लाने और कठिनाईयाँ पैदा करने के लिए ईश्वर को दोषी ठहराते हैं। लेकिन यीशु स्पष्ट कहते हैं; ये सब शैतान की ओर से हैं। शैतान हमसे सब कुछ छीनना चाहता है और हमें नष्ट करना चाहता है। यीशु हमें बचाने और हमें परिपूर्ण जीवन देने आए थे! मूल यूनानी भाषा में जीवन के लिए प्रयुक्त शब्द "ज़ोई" है, जिसका अर्थ है जीवन की पूर्ण परिपूर्णता, वास्तविक, सच्चा, सक्रिय, ऊर्जावान और धन्य जीवन!

ऐसे कई धर्म हैं जो दावा करते हैं कि उनके पास ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग है, लेकिन केवल वही धर्म सत्य को स्वीकारते हैं जो यह सिखाते हैं कि यीशु ही एकमात्र मार्ग है।

केवल एक ही रास्ता परमेश्वर तक पहुँचने का मार्ग, उनके पुत्र यीशु मसीह के माध्यम से है। वही द्वार हैं, और पिता तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग हैं।

पाठ के प्रश्न और स्मरण श्लोक

33. दरवाजा

1. दरवाजे से कौन अंदर आता है?
2. भेड़ें किसका अनुसरण करती हैं?
3. क्या भेड़ें किसी अजनबी का पीछा करेंगी? क्यों या क्यों नहीं?
4. इससे यह पता चलता है कि अगर हम यीशु को जानते हैं तो हम किन बातों को पहचान पाएंगे?

यूहन्ना 14:6

यीशु ने उससे कहा, “मैं ही मार्ग हूँ, सत्य हूँ और जीवन हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई भी परम पिता के पास नहीं आता।

34. मेरा पड़ोसी कौन है?

मत्ती 25:35-40 पढ़ें

1. यीशु ने कहा, मैं भूखा था और तुमने मुझे भोजन दिया?
2. मुझे प्यास लगी थी और तुमने मुझे पानी पिलाया?
3. मैं अजनबी था और?
4. मैं बीमार था और आप?
5. मैं जेल में था और आप?
6. जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो हम किसके लिए ऐसा करते हैं?

मत्ती 22:37-39

यीशु ने उससे कहा, “‘सम्पूर्ण मन से, सम्पूर्ण आत्मा से और सम्पूर्ण बुद्धि से तुझे अपने परमेश्वर प्रभु से प्रेम करना चाहिये।’ यह सबसे पहला और सबसे बड़ा आदेश है। फिर ऐसा ही दूसरा आदेश यह है: ‘अपने पड़ोसी से वैसे ही प्रेम कर जैसे तू अपने आप से करता है।’

35. दुष्ट सेवक

1. यीशु ने कितनी बार कहा कि हमें क्षमा करने की आवश्यकता है? समझाइए।
2. मालिक ने उस व्यक्ति को क्या दिया जिस पर बहुत बड़ी रकम का कर्ज था?
3. उस आदमी ने क्या किया जब उसके एक कर्मचारी पर उसका थोड़ा सा पैसा बकाया था?
4. अगर हम दूसरों को माफ नहीं करेंगे तो ईश्वर क्या करेगा?

मरकुस 11:26

किन्तु यदि तुम दूसरों को क्षमा नहीं करोगे तो तुम्हारा स्वर्ग में स्थित पिता तुम्हारे पापों को भी क्षमा नहीं करेगा।”

36. खोई हुई भेड़

1. चरवाहा कितनी भेड़ें पीछे छोड़ गया?
2. उसने बाकी भेड़ों को कहाँ छोड़ा?
3. खोई हुई भेड़ मिलने के बाद वह उसे कहाँ ले गया?
4. यीशु ने कहा कि जब कोई पश्चाताप करता है तो स्वर्ग में क्या होता है?

यशायाह 53:6

किन्तु उसके इतना करने के बाद भी हम सब भेड़ों की तरह इधर—उधर भटक गये। हममें से हर एक अपनी—अपनी राह चला गया। यही वास्तविकता हमें हमारे अपराधों से मुक्त कर दिये जाने के बाद और हमारे अपराध को अपने सेवक से जोड़ देने पर भी हमने ऐसा किया।

